आज की अव्यक्त मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:11-01-15

हम सुहागिन आत्माओं का सदा ज्ञान-रत्नों से और दिव्य-गुणों से श्रृंगार कर पदमापदम भाग्यशाली और सर्व-गुण सम्पन्न, सोले कला सम्पूर्ण बनाने बेहद के अमरनाथ, सुहाग ने कहा, तुम्हीं मेरी सदा सुहागिन अर्थात सदा सम्पन्न और सदा हर्षित रहने वाली, सदा अपने को आत्मा और परमात्मा के कम्बाइण्ड रुप को अनुभव करने वाली, सारे कल्प की श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ आत्मायें हो.

हम सदा सुहागिन आत्माओं का सबसे श्रेष्ठ भाग्य है हमारा अविनाशी बेहद का सुहाग.

स्वयं परमप्रिय-परमपिता-परमात्मा, अमरनाथ बाबा जिनका सुहाग है ऐसी सच्ची पार्वतियों के श्रेष्ठ जीवन पर कहे गये बापदादा के महा-वाक्यों -

- आज बापदादा बच्चों के श्रेष्ठ भाग्य और सदा सुहाग को देख हर्षित हो रहे हैं. हरेक ब्राह्मण आत्मा ये भाग्यशाली और सदा सुहागिन है.

- विश्व में सुहागिन आत्मा के जीवन की श्रेष्ठता इन दो बातों की होती है एक है सुहाग और दूसरा है भाग्य. अगर सदा सुहाग नहीं तो सारा जीवन बेकार अनुभव करते है. लेकिन आप सबका अविनाशी सुहाग है, जो कभी मिटने वाला नहीं क्योंकि अविनाशी अमरनाथ ही आप आत्माओं का सुहाग है. जैसे वह अमर है वैसे आपका सुहाग भी अमर है.

- सुहागवती स्वयं को सदा दुनिया में श्रेष्ठ समझती हैं, सुहागवती सदा साथ के कारण स्वयं को सन्तुष्ट समझती है. ऐसी सुहागिन आत्मा ये सदा श्रृंगार की अधिकारी होती है.

- सुहागिन आत्मा ये सदा सुहाग के कारण सुहाग के खजाने को सर्व खजाने अनुभव करती है अर्थात अपने को सम्पन्न समझती है. इसकी निशानी है सदा सन्तुष्टमणी रहती है.

- सुहाग की निशानी है तिलक और कंगन. आज का विश्व आप सदा सुहागिन के जड़ चित्रों को देख खुश होता कि यह आत्मायें अमरनाथ अर्थात पति परमेश्वर की सच्ची पार्वतियाँ हैं. आप सच्ची सुहागिन आत्मायें सदा स्मृति के तिलकधारी और मर्यादाओं के कंगनधारी आत्मायें, सदा दिव्य गुणों के श्रृंगार से सजी सजाई आत्मायें, आप सदा सुहागिन आत्मायें सदा सर्व खजानों से सम्पन्न और विश्व के परिवर्तन के श्रेष्ठ कार्य वा शुभ कार्य के निमित हो.

हम सदा सुहागिन आत्माओं का इस संगमयुग के अलौकिक जीवन की विशेषताओं पर कहे गये बाप-दादा के महा-वाक्यों -

- लौकिक रीति से भी भाग्य का आधार - तन की तंदुरुस्ती, मन की खुशी, धन की समृद्धि, सम्बन्ध की सदा संतुष्टि और सम्पर्क में सदा सफल मूर्त होता है, इन सब बातों से भाग्य को देखते हैं - तो अब संगमयुग का श्रेष्ठ भाग्य तुम ब्राह्मण आत्माओं का हैं.

- सदा स्वस्थ अर्थात सदा स्व में स्थित रहने से तन का कर्मभोग भी कर्मयोग से सूली से काँटा हो जाता है. कर्मभोग को भी बेहद के ड्रामा के अंदर खेल समझ कर खेलते हैं. तो तन का रोग योग में परिवर्तन हो गया, इसलिए सदा स्वस्थ हो. बीमारी को बीमारी नहीं समझते लेकिन अनेक जन्मो का बोझ हल्का हो रहा है, हिसाब चुक्तू हो रहा है - ऐसे समझने से सदा स्वस्थ रहते हो.

- आप आत्माओं को सदा मन की खुशी तो सदा प्राप्त है ही क्योंकि सदा मनमनाभव होना अर्थात खुशियों के खजाने से सम्पन्न हो.

- ज्ञान धन वालों की प्रकृति स्वतः ही दासी बन जाती है. जहाँ ज्ञान धन है वहाँ स्थूल धन की कोई कमी नहीं. तो धन का भाग्य भी सदा प्राप्त है.

- आप आत्माओं ने सर्व सम्बन्ध निभाने वाले परमात्मा को अपना बना लिया, जब चाहो, जैसे सम्बन्ध चाहो वैसा ही सम्बन्ध का रस एक द्वारा सदा निभा सकते हो, और सम्बन्ध भी ऐसे जो देने वाले होंगे लेने वाले नहीं. कभी धोखा देने वाले नहीं,सदा प्रीति की रीति निभाने वाले, ऐसे अमर सम्बन्ध के सद-भागी आत्मायें हो.

- आप आत्माओं का संगमयुगी जीवन में सम्पर्क भी सदा होली हंसो से है. आपका बाप के सम्पर्क के आधार से ब्राह्मण परिवार का श्रेष्ठ सम्पर्क है. विश्व की आत्माओं से सेवा का सम्पर्क होने के कारण - सदा विश्व कल्याण की भावना, विश्व परिवर्तन की कामना रहती है. इस कारण सेवा के सम्पर्क में भी कोई दुख की लहर नहीं. निंदा करें तो भी मित्र, गुणगान करें तो भी मित्र. सदा भाई-भाई की दृष्टि, रहम की वृति रहती है तो सम्पर्क भी श्रेष्ठ है.

ऐसा श्रेष्ठ भाग्य आप भाग्यवान आत्माओं को स्वयं भाग्य-विधाता से प्राप्त है. तो सदा श्रेष्ठ भाग्य आपका हुआ ना. इसी पर कहते है कि आप सदा सम्पन्न आत्माओं को अप्राप्त नहीं कोई वस्तु इस ब्राह्मण जीवन में.

ॐ शांति.

Feedbacks/Queries/Suggestions to Atma Bhai on email a.brahmin.soul@gmail.com.